ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-१०१
दिनांक-मंगलवार २४ दिसम्बर,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १८.६ एवं ९.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९० प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६५ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.९ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन २.८ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ११.४ एवं दोपहर में १८.५ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(२५-२९ दिसम्बर,२०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी २५-२९ दिसम्बर,२०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल छाये रह सकते है। इस अवधि में मौसम शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान १६ से १७ डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान ६ से ८ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। पूर्वानुमानित अवधि में ठंड व कनकनी बरकरार रहने की संभावना है। रात्री एवं सुबह में मध्यम से घने कुहासे छा सकते है। २५-२६ दिसंबर में शीत दिवस (Cold Day) की स्थिति बन सकती है।
- इस दौरान औसतन ५ से ८ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६५ से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- निम्न तापमान के कुप्रभाव से बचने के लिए किसान भाई खड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। खड़ी रबी फसलों जैसे आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर करें।
- रबी मक्का की ५०-५५ दिनों की फसल में ५० किलोग्राम नत्रजन का उपरिवेशन कर मिट्टी चढ़ाकर सिचाई करें। फसल में कीट एवं रोग-व्याधि की नियमित रुप से निगरानी करें।
- प्याज के तैयार पौध की पाँक्ति से पाँक्ति की दूरी १५ से०मी०, पौध से पौध की दूरी १० से०मी० पर रोपाई करे।
- मटर की फसल में अच्छे फलन के लिए २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करें। मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें।
- गेहूँ की पिछात किस्मों की बुआई अतिशीघ्र संपन्न करें। २५ दिसम्बर के बाद बुआई करने पर उपज में कमी आ सकती है। पिछात बोयी गयी गेहूँ की जो फसल २१-२५ दिनों की हो गई हो, में सिंचाई कर प्रति हेक्टेयर ३० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें। गेहूँ की फसल में यदि दीमक का प्रकोप दिखाई दें तो बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई० सी० २ लीटर प्रति एकड़ २०-२५ किलोग्रम बालू में अथवा उर्वरक में मिलाकर खेत में शाम को छिड़क दें।
- पहली सिंचाई के बाद गेहूँ की फसल में कई प्रकार के खर-पतवार उग आते है। यह गेहूँ की बुआई के ३० से ३५ दिनों के बाद की अवस्था है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को प्रभावित करती है। जिससे उपज प्रभावित होता है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रन हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्रम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्रम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में पर छिड़काव करें।
- आलू की फसल से खरपतवार निकालें एवं आवश्यकतानुसार १०-१५ दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। आलू में नियमित रुप से झुलसा रोग की निगरानी करें। आलू में कजरा पिल्लू दिखने पर फसल में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० का २.५ लीटर १००० लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- सब्जियों वाली फसल में निकाई-गुड़ाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें, यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे।
- टमाटर की फसल में फल छेदक कीट की निगरानी करे। इस कीट के पिल्लू टमाटर को बहुत अधिक नुकसान पहुचाते है। ये कच्चे तथा पके टमाटरो में छेद करके उनके अन्दर घुस कर गूदा खाते है। कीट के मल-मूत्र के कारण फल में सड़न प्रारंभ हो जाती है जिससे उत्पादन में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव हेतु ८-१० फेरोमौन ट्रैप प्रति हेक्टेयर खेत में लगाये। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १ मि०ली० प्रति ४ ली० पानी या इन्डोक्साकार्ब १४.५ एस०सी० १ मी०ली० प्रति २.५ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः २०.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.६ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ६.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.५ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार